350th Prakash Utsav: Guru Gobind Singh

Guru Gobind Singh was born on 22nd December 1666 at Patna, in Bihar. His father, Guru Tegh Bahadur, the Ninth Guru, was then travelling across Bengal and Assam. Returning to Patna in 1670, he directed his family to return to the Punjab. On the site of the house at Patna in which Gobind Rai was born and where he spent his early childhood now stands a sacred shrine, Takht Sri Harimandar Sahibji, one of the five most honoured seats of religious authority for the Sikhs. Gobind Rai was escorted to Anandpur on the foothills of the Sivaliks where he reached in March 1672 and where his early education included reading and writing of Punjabi, Braj, Sanskrit and Persian. After the martyrdom of ninth Guru, Guru Tegh Bahadur (his father) he was formally installed as tenth Guru on the Baisakhi day of 29th March 1676.

Guru Gobind Singh Ji infused the spirit of both sainthood and soldier in the minds and hearts of his followers to fight oppression in order to restore justice, peace, righteousness (Dharma) and to uplift the down-trodden people in this world. Guru Gobind Singh created the Panj Pyare and became the first to request initiation by them into the Khalsa. The creation of the Khalsa created a sense of unity among the Sikhs and their supporters. He preached the worship of the One Supreme Being.

In the midst of his engagement with the concerns of the community, he gave attention to the mastery of physical skills and literary accomplishment. He had a natural genius for poetic composition and his early years were assiduously given to this pursuit. The Var Sri Bhagauti Ji Ki, popularly called Chandi di Var, written in 1684, was his first composition and his only major work in the Punjabi language. The poem depicted the legendary contest between the gods and the demons as described in the Markandeya Purana. The choice of a warlike theme for this and a number of his later compositions such as the two Chandi Charitras, mostly in Braj, was made to infuse martial spirit among his followers to prepare them to stand up against injustice and tyranny. For him poetry was a means of revealing the divine principle and concretizing a personal vision of the Supreme Being that had been vouchsafed to him. Through his poetry he preached love and equality and a strictly ethical and moral code of conduct.

Guru Gobind Singh named Guru Granth Sahib, the religious text of the Khalsas and the Sikhs, as the next Guru. He left his bodily form on October 7 in 1708, as he was attacked during his sleep at Nanded.

His teachings are very simple to understand and most suitable for all times. His teachings inspire millions of his followers to strive thousands high values of humanity and brotherhood.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on 350th Prakash Utsav of Guru Gobind Singh.

Credits:-

Text	:	Based on the material available on internet
Stamp / Miniature Sheet/ FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Kamleshwar Singh

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

350वाँ th

प्रकाश उत्सव
गुरु गोबिंद सिंह
Prakash Utsav
Guru Gobind Singh

तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब
Takht Sri Harimandir Ji Patna Sahib

विवरणिका BROCHURE

350वाँ प्रकाश उत्सव : गुरू गोबिन्द सिंह

गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म 22 दिसम्बर, 1666 को बिहार में, पटना में हुआ था। उनके पिता, गुरु तेग बहादुर, नौंवें गुरू, तब बंगाल और असम की यात्रा पर थे। 1670 में पटना वापस आने पर, उन्होंने अपने परिवार को पंजाब वापस लौटने का निर्देश दिया। पटना के उस घर के स्थान पर जहां गोबिन्द राय का जन्म हुआ और जहां उन्होंने अपना प्रारंभिक बचपन बिताया, अब एक धार्मिक स्थान, तख्त श्री हरिमंदिर साहिब जी है, जो सिक्खों के पाँच सर्वाधिक पावनतम स्थानों में से एक है। गोबिन्द राय को शिवालिक की तलहटियों में बसे आनंदपुर साहिब ले जाया गया, जहां वे मार्च 1672 में पहुंचे। यहीं पर उन्होंने पंजाबी, ब्रज, संस्कृत और फारसी भाषाओं को पढ़ना और लिखना सीखने के साथ-साथ अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। नौंवें गुरू, गुरु तेग बहादुर (उनके पिता) की शहादत के बाद, 29 मार्च, 1676 को, बैसाखी के दिन, उन्हें औपचारिक रूप से दसवें गुरु के रूप में पदासीन किया गया।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इस संसार के पिछड़े लोगों का उत्थान करने और न्याय, शांति, धर्मपरायणता (धर्म) की पुर्नस्थापना करने हेतु अत्याचार के विरूद्ध लड़ाई लड़ने के लिए अपने अनुयायियों के दिलों में साधुता और सिपाही दोनों के गुण भर दिए। गुरु गोबिन्द सिंह ने ''पंज प्यारे'' का चयन किया और वे पहले व्यक्ति बने जिन्होंने उनसे स्वयं को खालसा में दीक्षित किए जाने का अनुरोध किया। खालसा की स्थापना से सिक्खों और उनके समर्थकों के बीच एकता की भावना पैदा हुई। उन्होंने परमेश्वर की पूजा करने का उपदेश दिया।

समाज के हित के कार्यों में संलग्न रहते हुए, उन्होंने युद्ध कौशल और साहित्यिक सर्जना में निपुणता हासिल करने की ओर ध्यान दिया। काव्य के सृजन की उनमें नैसर्गिक प्रतिभा थी और जीवन के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने बड़े मनोयोग से साहित्यिक लेखन किया। 1684 में लिखी गई ''चंडी दी वार'' के नाम से लोकप्रिय 'दी वार श्री भगौती जी की', पंजाबी भाषा में उनकी पहली और एकमात्र प्रमुख साहित्यिक रचना थी। इस कविता में देवताओं और दानवों के बीच हुए प्रसिद्ध युद्ध का चित्रण किया गया है, जैसा कि मार्कण्डेय पुराण में वर्णित है। इसके लिए युद्ध जैसे विषय को चुनना और उनकी बाद की अनेक रचनाएं जैसे दो चंडी चरित्र, जो अधिकांशत: ब्रज भाषा में हैं, अपने अनुयायियों में अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध लड़ने के लिए वीरता की भावना जागृत करने हेतु लिखी गई थीं। उनके लिए काव्य रचना, विधाता के विधान को अभिव्यक्ति प्रदान करने के साथ-साथ ईश्वरीय कृपा से प्राप्त परमात्मा की आत्मानुभूति को मूर्त रूप में प्रकट करने का माध्यम थी। अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से उन्होंने प्रेम और समानता तथा नैतिक मूल्यों और सदाचार का कड़ाई से अनुपालन करने का उपदेश दिया।

गुरु गोबिन्द सिंह ने खालसा और सिक्खों के धर्म-ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' को अगले गुरु का नाम दिया। नांदेड में सोते समय उन पर हमला किया गया जिससे 7 अक्टूबर, 1708 को उनका देहांत हो गया।

उनके उपदेश बहुत ही सरल हैं जो आसानी से समझ में आ जाते हैं। ये सभी काल खंडों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं। उनके उपदेश हजारों-लाखों अनुयायियों को मानवता और बंधुत्व के उच्च मूल्यों का अनुसरण करने की प्रेरणा देते हैं।

डाक विभाग गुरु गोबिन्द सिंह के 350वें प्रकाश उत्सव पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ विरूपण : श्री कमलेश्वर सिंह

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1000 पैसा
Denomination	:	1000 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	301590
Stamps Printed	:	301590
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00